ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

वागड प्रदेश में ग्रामीण अधिवास वितरण
Distribution of Rural Settlement in Vagad Region

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

पी..एल. कटारा
एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
वीर बाला कालीबाई राजकीय कन्या महाविद्यालय, डूंगरपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

अध्ययन क्षेत्र में स्थित वागड प्रदेश में जनसंख्या वितरण उस क्षेत्र की धरातलीय दशाए, जलवायु, प्राकृतिक एवं खनिज संसाधन, परिवहन व संचार की सूविधाए, भूमि उपयोग, व्यवसायी क्रियाए व पानी की सूविधाए आदि अनेक तत्व ने प्रभावीत किया है। यह क्षेत्र अरावली पर्वत श्रंखला का हिस्सा होने से धरातलीय विषमताएं पायी गयी है। जिससे यहां पर अधिकांश अधिवास बिखरे हुए पाये गये है। यह अधिवास प्राकृतिक पदार्थो पर आधारित परम्परागत रूप से बनाये गये है।

In Vagad region located in the study area, the population distribution of the area has been influenced by many elements, surface conditions, climate, natural and mineral resources, transport and communication facilities, land use, business activities and water facilities etc. This region has been found to be a part of the Aravalli mountain range. Due to which most of the domiciles have been found scattered here. This occupancy is traditionally based on natural substances.

मुख्य शब्द : भौगोलिक पर्यावरण, जनानांकिय सरंचना, संचार के साधन, धरातलीय विषमताएं, बस्तियों का आकार, गिनी गुणांक।

Geographical Environment, Demographic Structure, Means of Communication, Surface Asymmetries, Size of Settlements, Gini Coefficient.

प्रस्तावना

वागड क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, खनिज संसाधन, प्राकृतिक संसाधन, धरातल, उपजाऊ भूमि, उपलब्ध सिचाई सुविधाएं, परिवहन तंत्र एवं संचार की सुविधाएं ग्रामीण अधिवास के विरतण प्रतिरूप को सूनिश्चित करते है। साथ ही भौतिक, सांस्कृतिक, तथ्य उच्चावच, पानी आपूर्ति के साधन, प्रवाह तंत्र मिट्टी की विषमताएं भूमि उपयोग प्रतिरूप, फसल प्रारूप, परिवहन आदि तत्व मानव अधिवास के वितरण के लिये उत्तरदायी है, अधिवास व वातावरण के मध्य सम्बन्ध पर व्याख्या करते हुए हस्टन महोदय ने बताया है कि "ग्राम" व अधिवास अपने वातावरण में अत्यधिक ओत – प्रोत होते है, क्योकि उनका जन्म ही उस मिट्टी से हुआ जहा उनकी स्थिति है' मानवीय आवास पृथ्वी धरातल की महत्वपूर्ण घटना एवं इकाई है जिसकी स्थिति, आकार, बनावट, प्रतिरूप एंव कार्यो पर न केवल भौगोलिक वातावरण का प्रभाव मानवीय सामाजिक, सांस्कृतिक तकनीकी एवं आर्थिक तथा व्यवसायिक क्रियाओं आदि पर प्रकृति का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इन सभी तत्वो के सम्मिलित प्रभाव से किसी प्रदेश में अधिवासो का एक विशेष स्वरूप उभर कर आता है। मानव का आश्रय स्थल घर है, मानव सभ्यता जितनी पुरानी है उतना मानव अधिवास प्रारम्भिक काल में मानव ने अपनी सुरक्षा हेतु आश्रय स्थल बनाया तथा मानव ने समूह में रहना पसन्द किया वह एकाकी जीवन यापन नही कर सकता था, क्योकि स्वभावतः वह एक सामाजिक प्राणी है। मानव के इन समूह को उनका आकार, विस्तार व बसावट के आधार पर विभिन्न नामो से पुकारा जाता है। जैसे कुछ घरो क समूह को पुरवा या नंगला, फला, ढाणी कहते है। तथा बडे स्वरूपो को गांव, कस्बा, नगर तथा महानगर आदि नामो से संबोधित किया जाता है। इस प्रदेश मे एकाकी, नाभकिय, व्यासृत, या विसरित स्वरूपो मे वितरण देखे जाते है। यह वितरण धरातलिय विषषेताओ से मुख्य रूप से प्रभावित होते है। वागड प्रदेश में मानव अधिवासो के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन हेतु ऐतिहासिक बस्तियों के उद्भव स्थलो पर दृष्टिपात करना अतिआवश्यक है। यह क्षेत्र जनजाति बाहुल क्षेत्र है इसमें रहने वाले लोगो का अधिवास परम्परागत ढंग से चला आ रहा है जो पूर्णतया प्रकृति पर आधारित है। अधिकांश मानव अधिवास अपनी कृषि भूमि

पर बने हुए है मकान का निर्माण आस पास के धरातल से कुछ उपर उठे हुए भाग पर बनाता है। ताकि पानी के बहाव से बचाया जा सकता है। वर्तमान में वागड क्षेत्र में अधिवास के वितरण मे काफी विषमताए पायी गयी है क्योकि यहा पर्याप्त कृषि भूमि, नजदीकी बाजार सुविधाए, सिचाई कि सुविधाए, यातायात की सुविधाए अनूकूल है। उस क्षेत्र में अधिवास की संख्या अधिक है। जहां पर पहाडी भू–भाग पथरीली भुमि, ढालू भूमि, अनुपजाऊ भूमि, कृषि पूर्ण रूप से वर्षा पर आधारित होने से अधिवास बिखरे हुए पाये गये है।

विधितंत्र

अध्ययन क्षेत्र में द्वितीयक आकडो का संकलन कर मानचित्र, आरेख व गिनी का गुणांक विधि द्वारा ग्रमीण अधिवास वितरण को दर्षाया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन प्रदेश के भौगोलिक पर्यावरण का अध्ययन करना
2. जनानांकीय संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत करना।
3. मानव अधिवासो कि वृद्धि एवं विकास पर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक तत्वो के प्रभावो का परीक्षण करना।
4. अधिवासो का पर्यावरण के साथ सम्बन्धो का अध्ययन करना।
5. अध्ययन क्षेत्र के धरातलीय विषमताओं का अध्ययन करना।

जनसंख्या आकार वर्ग के आधार पर ग्रामीण अधिवासो का वितरण

वागड प्रदेश मे कुल 2362 ग्राम आबाद है जिसमें प्रदेश की कुल जनसंख्या 2609232 व्यक्ति निवास करते है। जनसंख्या आकार के आधार पर अध्ययन किया जाये तो इस प्रदेश मे ग्रमीण बस्तियों में काफी विभिन्नताए पाई गई है । 200 व्यक्ति से कम जनसंख्या वाली बस्तियों का प्रतिशत 10.16 पाया गया है। जो 240 गांवो मे आवासीत है, जबकि 200 से 500 व्यक्ति के मध्य जनसंख्या वाली बस्तियों का प्रतिशत 25.15 है। जो 549 गांवो में निवास करती है इसी प्रकार 500 से 1999 व्यक्ति वाले आकर वर्ग में सर्वाधिक बस्तियां 1252 ग्राम पाये गये है। जिसका कुल अधिवासो का 53 प्रतिशत भाग पाया गया है। अध्ययन प्रदेश के कुल अधिवासो का पचास प्रतिशत से अधिक इसी आकार वर्ग के अन्तर्गत आता है। जैसे जैसे जनसंख्या आकार वर्ग में वृद्धि होती जाती है। वेसे अधिवासो की संख्या में कमी आती जाती है। 2000 से 4999 व्यक्ति की आबादी वाली बस्तियों की संख्या 247 है जो कुल अधिवास का 10.46 प्रतिशत है 5000 से 9999 व्यक्ति के आकार वर्ग वाले गांव 27 है 10000 से अधिक जनसंख्या वाले अधिवास मात्र 2 है। जो कुल बस्तियों का 0.08 प्रतिशत है ग्रमीण अधिवासो के वितरण पर निष्कर्ष निकाला जाए तो उसमे काफी विभिन्नताए पायी गई है। छोटे आकार की बस्तियों की संख्या अधिक पायी गयी है। बडे आकार की बस्तियों में कमी पायी गयी है वागड प्रदेश में अरावली पर्वत श्रंखला का प्रभाव अधिक है। साथ ही सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक कारक व धरातलिय स्परूप ने वितरण को प्रभावित किया है।

जनसंख्या आकार के आधार पर वागड प्रदेश में ग्रमीण बस्तियों का वितरण

बस्तियों की श्रेणी	जनसंख्या आकर वर्ग	अधिवासो का वितरण	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
I	<200	240	10.16	10.16
II	200–499	594	25.15	35.31
III	500–1999	1252	53.00	88.31
IV	2000–4999	247	10.46	98.77
I	5000–9999	27	1.15	99.92
VI	>10000	2	0.08	100
	योग	2362	100%	100%

सोत : भारतीय जनगणना विभाग 2011

ग्रमीण अधिवासो का आकार वर्ग के आधार पर वितरण – 2011

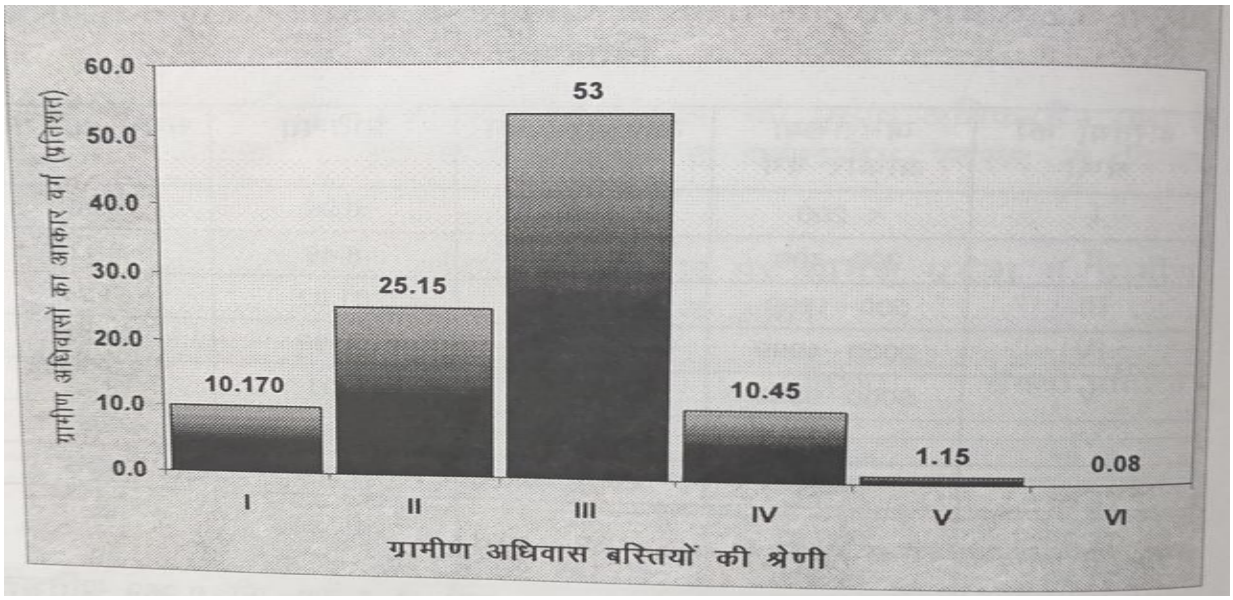

संचयी आवृतियों के आधार पर बस्तियों में वितरण प्रतिरूप समझने मे काफी सहायक होता है। अध्ययन क्षेत्र में छोटे–छोटे अधिवासो की संख्या अधिक है 2000 से कम जनसंख्या वाली बस्तियों के अन्तर्गत 88.31 प्रतिशत है। प्रदेश में छोटे व मध्यम आकार की बस्तियों का योगदान रहा है। जबकि 2000 से अधिक आकार वाले जन संमूह में मात्र 11.69 प्रतिशत बस्तियां आती है।

ग्रामीण अधिवासो का आकार के आधार पर जनसंख्या वितरण

अध्ययन क्षेत्र में आकर वर्ग के आधार पर अधिवासो के वितरण के समान ही जनसंख्या के वितरण में भी असमानता की प्रवृति देखी गई है, परन्तु इन दोने तत्वो के वितरण में विपरीत सह सम्बंध पाया गया है। अर्थात् जिन आकार वर्ग में बस्तियों की संख्या अधिक है उनमें जनसंख्या कम निवास करती है तथा जिन वर्गो में अधिवासो की संख्या कम हे उनमें जनसंख्या का वितरण अधिक पाया गया है बडे आकार की बस्तियों की संख्या मात्र दो है उनमें निवास करने वाली जनसंख्या का अनुपात अधिक है

ग्रामीण अधिवासो के आकार के आधार पर जनसंख्या का वितरण

बस्तियों की श्रेणी	जनसंख्या आकर वर्ग	अधिवासो का वितरण	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
I	<200	24953	0.96	0.96
II	200–499	220874	8.46	9.42
III	500–1999	1352128	51.82	61.24
IV	2000–4999	808487	30.99	92.23
I	5000–9999	180263	6.91	99.14
VI	>10000	22527	0.86	100
	योग	2609232	100%	100%

सोत : भारतीय जनगणना विभाग 2011

जनसंख्या वितरण अधिवास आकार वर्ग के आधार पर

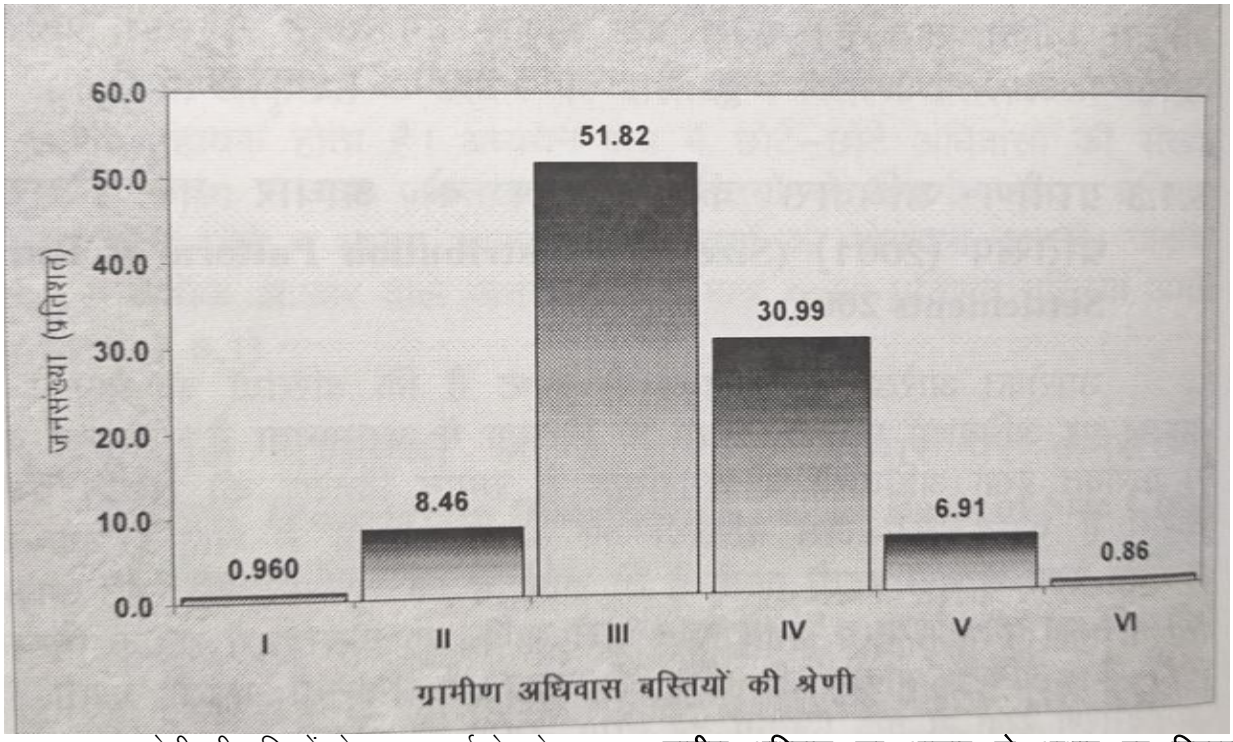

प्रथम श्रेणी की बस्तियों के आकार वर्ग मे प्रदेश की 0.969 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है जबकि द्वितीय आकार वर्ग में 8.46 प्रतिशत जनसंख्या रहती है वही 500–1999 जनसंख्या समुह वाले अधिवासो में 51.82 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। अन्य 2000–4999 वर्ग समूह मे 30.99 प्रतिशत व्यक्ति रहते है। सबसे बडे आकार वर्ग समूह में 6.91 प्रतिशत जनसंख्या 5000–9999 जन समूह के अन्तर्गत रहती है।

ग्रामीण अधिवास का आकार के आधार पर वितरण प्रतिरूप

बस्तियों के आकार के आधार पर अधिवासो एवं जनसंख्या के वितरण में असमानता लोरेन्ज वक्र में कर्णवत रेखा अधिवासो व जनसंख्या में समान वितरण की स्थिति प्रकट करती है। परन्तु जैस जैसे बस्तियों का आकार बढता है लोरेन्ज वक्र का कर्णवत रेखा से दूरी बढती जाती है। तो स्पष्ट है कि शुरूआत की छोटे आकार की बस्तियों की संख्या व उनमें रहने वाले व्यक्ति के वितरण मे अधिक भिन्नता नही है लेकिन आकार में वृद्वि के साथ ही भिन्नता बढती जाती है। समवितरण रेखा से वक्र

जितना दूर होगा उतना ही जनसंख्या व अधिवास का संकेन्द्रण रहेगा।

गिनी का गुणांक (Ginis Coefficient)

बस्तियों की श्रेणी	बस्तियों की संख्या %	ग्रामीण जनसंख्या वितरण % कुल जनसंख्या	संचयी प्रतिशत		Xiyi +1	yiXi +1
			बस्तियों का प्रतिशत	ग्रामीण प्रतिशत		
I	10.16	0.96	10.16	0.96	95.70	133.89
II	25.15	8.46	35.31	9.42	2162.38	831.88
III	53.00	51.82	88.31	61.24	8144.83	6048.67
IV	10.46	30.99	98.77	92.23	9792.05	9215.62
V	1.15	6.91	99.92	99.14	9992	9914
VI	0.08	0.86	100	100	-	-
याग	100	100			30186.96	26044.06

$$G = \frac{1}{1 \times 100}\left(\sum x_i y_i + 1 - \sum y_i x_i + 1\right)$$

$$G = \frac{1}{10000}(30186.96 - 26044.06)$$

$$= 0.414$$

लोरेन्ज कर्व

ग्रमीण अधिवासो की संख्या एवं ग्रमीण जनसंख्या के मान के आधार पर

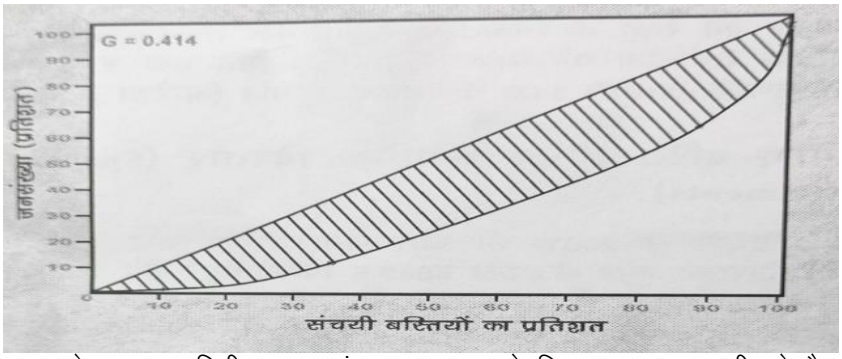

उपरोक्त गणना के अनुसार गिनी का गुणांक (G) = 0.414 है। यह वागड प्रदेश में अधिवासों (बस्तियो) के संकेन्द्रण को व्यक्त करता है। अर्थात यहां बस्तियों के वितरण में काफी असमानता है गिनी के गुणांक के सम्पूर्ण क्षेत्र में संकेन्द्रण का समन्वित मापन किया जाता है। एक ही गणितीय मुल्य से संकेन्द्रण की क्षेत्रीय प्रवृति का पता चलता है। इस गुणांक का मुल्य 0 से 1 के बीच आता है तथा 0 से क्रमषः अधिक मुल्य अधिक संकेन्द्रण की प्रवृति को व्यक्त करता है। समवितरण की रेखा के निकट रहने पर वक्र निम्न संकेन्द्रण को और दुर रहने पर अधिक संकेन्द्रण को व्यक्त करता है।

निष्कर्ष

अध्ययन प्रदेश की भौगोलिक स्वरूप का विष्लेषण किया गया है। जो वागड क्षेत्र के पूर्वी व उत्तरी भाग समतल व माही बेसीन, दक्षिणी भाग पठारी तथा पष्चिमी भाग में अरावली की पहाडीयां विस्तृत है जो जनसंख्या वितरण को प्रभावित किया है। जहां पर पठारी व पर्वतीय भू'–भाग है वहां छोटे छोटे आकार की बस्तियां विकसित हुई है इन बस्तियों के बीच की दूरीयां बढी हुई पायी गयी है साथ ही घनत्व भी कम पाया गया है। उसके निम्न तत्व उत्तरदायी रहे है। धरातलीय उच्चावच, बंजर भूमि, प्राकृतिक वन सम्पदा आदि। जहां पर समतल भूमि व बेसीन भू–भाग में जनसंख्या अधिक निवास करती है। वहां उच्च घनत्व व आवासो के मध्य दूरी कम पायी गई है। क्योंकि बस्तियों के विकास में जनसंख्या वृद्वि के लिये भौगोलिक, आर्थिक समाजिक व सांस्कृतिक तत्व अनुकूल पाये गये है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Mandal, R.B (1982) Statistics for Geographers and Social Scientists – Concept Publishing Company New Delhi.*
2. *Census of India (1991) District Census Hand Book of Dungarpur District, Directorate of Census Operation Jaipur*
3. *Singh R.Y – Bhills of Malwa Region : their Habitat Economy and Society" National Geographycal Jouranl of India Vol XVIII No. 3rd and 4 (1972) PP 223-239*
4. *Vyas, P.R(1991) "Distribution and Planning of Medical and health Amenities in Tribal Area A. Case Study of Dungarpur District" A Research Project Submitted the T.R.I Udaipur .*